

## जलवायु परिवर्तन, मानव एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य

डॉ. नगमा खानम<sup>1</sup>

<sup>1</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन)

Received: 15 Feb 2025, Accepted & Reviewed: 25 Feb 2025, Published: 28 Feb 2025

### Abstract

सर्वविदित हैं कि पृथ्वी पर, पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि होना ही वैश्विक तापन है तथा इसी प्रकार पृथ्वी की जलवायु में प्रकृति के विपरीत होने वाले परिवर्तन को, जलवायु परिवर्तन या क्लाइमेटचेंज कहते हैं वि इसका सबसे प्रमुख कारण ग्रीनहाउस गैसों को माना जा सकता है इन गैसों में CO<sub>2</sub>, CFC, O<sub>3</sub>, N<sub>2</sub>O आदि शामिल है, इसके अतिरिक्त ओजोन परत का पतला होना, वायु प्रदूषण जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वनों की कटाई, उद्योग धंधों तथा परिवहन के माध्यम से अंधाधुंध धुये का निकलना, यह सभी कारण भी इन सभी गैसों को बढ़ावा देते हैं और वर्तमान समय में इसके अतिरिक्त अत्यधिक कार्बन का, कुछ देशों (चीन, अमेरिका, यूरोपीय संघ, भारत) द्वारा उत्पादन होना व वर्तमान समय में इसका एक सबसे प्रमुख कारण हथियारों की होड़ को भी माना जा सकता है जिसने पूरे विश्व को एक बारूद के ढेर पर खड़ा कर दिया है। आए दिन होने वाले विभिन्न हथियारों के परीक्षणों ने पर्यावरण पर बहुत बड़ा आघात किया है।

**बीज शब्द**— जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन, पर्यावरण, मानव, वैश्विक मुद्दे, औद्योगिकीकरण, जीवाश्म ईंधन, प्रदूषण।

### Introduction

पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि होने से, जलवायु में परिवर्तन आया है तथा जिससे ग्लेशियर लगातार पिघल रहे हैं, जिससे निकट भविष्य में समुद्र तल में अत्यधिक वृद्धि देखने को मिल सकती हैं समुद्र के जल के बढ़ने से, जैव विविधता का ह्रास हो रहा है तथा भविष्य में कई द्वितीय देशों (मालदीप, लक्षद्वीप, इंडोनेशिया के कई द्वीप) का जलमग्न (जल में डूबने) होने का खतरा बना हुआ है एवं ग्लोबलवार्मिंग तथा क्लाइमेट चेंज से मानव जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा, जैसे रोगों में अत्यधिक वृद्धि, भुखमरी का बढ़ना तथा अत्यधिक जनसंख्या बढ़ने से, आवाज की समस्या, कृषि की समस्या, बाढ़— सुखा आदि का होना। प्रकृति व पर्यावरण के विपरीत कार्य करने का परिणाम मानव जाति स्वयं भगत रही है इसका वर्तमान में सबसे प्रमुख उदाहरण तुर्की भूकंप त्रासदी तथा उत्तराखंड के जोशीमठ की जमीन का धसना और लगातार भूकंपों तथा अन्य पर्यावरणीय समस्याओं के आने के कारण कई लाख लोगों की मृत्यु के हो जाने से समझ सकते हैं। ऐसा नहीं है कि विश्व के अन्य देशों और भारत द्वारा इसके रोकथाम हेतु कदम नहीं उठाए गए।

विश्व स्तर पर उठाये गए कदम या प्रयास निम्न प्रकार है—

- (1) स्टॉकहोम सम्मेलन 1972
- (2) पृथ्वी सम्मेलन (रियो— 20) 1992
- (3) क्योटो प्रोटोकॉल (जापान) 1997
- (4) मॉन्ट्रियल समझौता 1987
- (5) पेरिस समझौता 2015 तथा Cop की अन्य बैठकों और विभिन्न माध्यमों से प्रयास किए जा रहे हैं।

इसी प्रकार भारत के स्तर पर—

वन संरक्षण अधिनियम 1980, राष्ट्रीय वन नीति 1988, जैव विविधता संरक्षण अधिनियम 2002, जलनीति 2002, राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2004 तथा पर्यावरण मुकदमों को निपटाने के लिए 2010 में NGT(national, Green,Tribunal) की स्थापना, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण अधिनियम 1973, इसी प्रकार/इसी क्रम में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद (1952–1988) लक्ष्य रखा गया था कि भारत में 33: भाग पर वन होंगे तथा इसके ऊपर तब से लगातार काम किये जा रहे हैं, जिसका परिणाम वर्तमान समय में दिखने लगा है, भारत में 2017 में, 24.39% भाग पर वनों का विस्तार था जो 2019 में बढ़कर 24.56% हो गया है जोकि पर्यावरण के लिए एक अच्छी बात है।

Cop–27 की बैठक 2022 में मिस्र में हुई तथा Cop–28 की बैठक 2023 में दुबई, यूएई में हुई तथा अब COP–29 की बैठक नवम्बर 2024 में अजरबैजान की राजधानी बाकू में होगी। इन Cop की बैठकों के माध्यम से, विभिन्न देश एक साथ मिलकर, इन पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए, विभिन्न नियमों व प्रयासों का खाका( ड्राफ्ट) तैयार करते हैं।

मेरे अनुसार उपाय/प्रयास वास्तव में 3 स्तर पर होने चाहिए—

- (1).विश्व स्तर पर—नीति निर्माण करना इसे सभी देशों के लिए बाध्यकारी बनाना ।
- (2).देश स्तर पर—वन तथा प्रदूषणऔर स्वच्छता मिशन पर कार्य होने चाहिए।
- (3).मानव स्तर पर—लाइट,पानी, वृक्षारोपण करने पर बल देना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन (DykbesVpsat)

जलवायु—यह डिग्री कालिक मौसमी गतिविधियों का औसत है जो की न्यूनतम 30 से 35 वर्षों की तापमान, वर्षा का परिणाम होता है।

जलवायु परिवर्तन—किसी स्थान के तापमान, वर्षा व आर्द्रता के संख्यात्मक मान में होने वाले परिवर्तन को ही जलवायु परिवर्तन कहते हैं जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन (Global warming) का ही एक प्रभाव या परिणाम है।

जलवायु परिवर्तन के कारण या कारक

(1). प्राकृतिक कारक—

रु महाद्वीपीय विस्थापन

रु पृथ्वी का झुकाव

रु ज्वालामुखी विस्फोट

रु समुद्री धाराये

(2). मानवीय कारक—

रु शहरीकरण

रु वन— उन्मूलन

रु रासायनिक कीटनाशक

रु औद्योगिकीकरण

वैश्विक तापन (ग्लोबलवार्मिंग)

सामान्य अर्थों में कहे तो, पृथ्वी पर, पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि होना ही ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है, पृथ्वी का औसत तापमान 14 डिग्री सेल्सियस होता है।

ग्लोबल वार्मिंग का सबसे प्रमुख कारण, ग्रीन हाउस गैसों (हरित गृह गैसें) को माना जाता है, ग्रीन हाउस गैसों के बारे में, सर्वप्रथम 1824 में जोसेफ फोरियर नामक वैज्ञानिक ने बताया।

Hot Spots of Global warming

IPCC ने स्पष्ट किया है कि वैश्विक तापन से आज संपूर्ण पृथ्वी संकट में है तथा ऐसे स्थान जो लंबे समय से संतुलित पारिस्थितिक दशाओं वाले रहे हैं वहाँ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है, वैज्ञानिकों ने ऐसे 20 तप्त स्थल चिन्हित किए हैं।

Exaa—ग्रीनलैंड (NA), रॉकी पर्वत, अलास्का के क्षेत्रों में हिमनदों का पिघलना, वेनेजुएला में आधे से अधिक हिमनदों के पिघलने की आशंका, अफ्रीका के किलिमंजारो पर्वत, चीन का तिआशान पर्वत एवं भारत में गंगोत्री के हिमनद सर्वाधिक संकट की स्थिति में हैं।

ग्रीन (हरित) गृह प्रभाव –

ग्रीन हाउस इफेक्ट एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें ग्रीनहाउस गैसों द्वारा इंफ्रारेड विकिरण के अवशोषण के माध्यम से वायुमंडल के तापमान में वृद्धि होना, ग्रीनहाउस इफेक्ट कहलाता है।

CO<sub>2</sub> और जलवाष्प वायुमंडल में उपस्थित होने के कारण सूर्य की किरणों अर्थात् प्रकाश का अवशोषण सर्वाधिक होता है।

जिम्मेदार कौन है—

- (1) विभिन्न प्रकार की गैसें
- (2) अनेक देश
- (3) पर्यावरण के प्रति जागरूक न रहने वाले व्यक्ति

ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ने के कारण –

(1). CO<sub>2</sub> (सबसे भारी व सर्वाधिक जिम्मेदार, 60% , CH<sub>4</sub>(20%), C.F.C, O<sub>3</sub>, N<sub>2</sub>O, HFCs(Perfloro carbon), NF<sub>3</sub>(Nitrogen trifloride), SF<sub>6</sub>, (sulfer hexafloride) etc- गैसों की बढ़ती मात्रा।

(2). वनों की कटाई।

(3). विभिन्न माध्यमों से होने वाला प्रदूषण।

(4). औद्योगिकीकरण।

(5) उद्योग धंधों व परिवहन के माध्यमों से निकलने वाला अंधाधुंध धुंआ।

कार्बन CO<sub>2</sub> उत्पादक प्रमुख देश (उत्सर्जन)

(1). चीन – लगभग 30% (विश्व में सर्वाधिक)

(2). USA – लगभग 15%

(3). भारत – लगभग 9: ( विश्व में तीसरा स्थान)

(4). रूस

(5). जापान

।ददनंस ळतममद वनेम ळं मउपेपवदे इलंमबजवत.

- (1). Electric power stations - 25-6%
- (2). Industrial process - 15-9%/16%
- (3). Transportation fuels- 13-2%
- (4). Land use and biomass burning -12-1%
- (5). Agricultural production - 11-6%
- (6). Fossil fuels retrieval processing and distribution-10-5%
- (7). Residential commercial and other sources - 7-5%
- (8). Waste disposal and treatment - 3-6%

प्रति व्यक्ति की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक CO<sub>2</sub> उत्सर्जित देश (टन में)–

- (1)– कतर – 37.97%
- (2)– कुवैत– 23.70%
- (3)– रूस – 21.35%
- (4)– सऊदी अरब – 18.43%
- (5)– कजाकिस्तान – 17.57%

क्लाइमेटचेंज/ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

- (1). पृथ्वी/पर्यावरण पर –
  - रु औसत तापमान में वृद्धि होगी।
  - रु जलवायु परिवर्तन।
  - रु ग्लेशियर का पिघलना।
  - रु वर्षा के पैटर्न में बदलाव।
  - रु समुद्र जल के स्तर में वृद्धि।
  - रु वन्यजीव प्रजाति का नुकसान।
  - रु जंगलों में आग की घटनाओं में वृद्धि।
  - रु जैव विविधता का ह्रास होना।
  - रु ओजोन परत का ह्रास होना।
  - रु पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव आना।
- (2). मानव पर –
  - रु रोगों में वृद्धि।
  - रु भूखमरी।
  - रु महामारी।
  - रु आवास की समस्या।
  - रु कृषि की समस्या।
  - रु बाढ़ व सूखा में वृद्धि।

उच्च तापमान से उत्पन्न समस्याएं

- (1). हिमनदों से निकलने वाली नदियों (सदानीरा नदियां) में, हिमनदों के पिघलने से, नदियों के जल स्तर में वृद्धि होगी जिससे बाढ़ का खतरा बढ़ जाएगा अंततः जब ग्लेशियर पूर्णता समाप्त हो जाएंगे तो सदानीर नदियां सूख जाएंगी।
- (2). नदियों के सूख जाने के कारण सुखा पड़ने लगेगा और नदियों के किनारे सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है जिससे कृषि की समस्या उत्पन्न होगी और अकाल तथा भूखमरी फैलेगी।
- (3). जब नदियों का पानी अनियंत्रित होकर मैदानी भागों में पहुंचेगा तो जल भराव की समस्या उत्पन्न होगी, जिससे मच्छरों आदि कीटों में वृद्धि कारण डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियां व महामारियाँ फैलेंगी।
- (4). अत्यधिक तापमान बढ़ने से, हमारे सम्मुख लगातार, जंगलों/वनों में आग लगने की खबरें आ रही हैं। वर्षा के पैटर्न में बदलाव से उत्पन्न समस्याएं

- (1) कृषि की समस्या
- (2) उत्पादन में कमी
- (3) खाद्यान्न की समस्या
- (4) गरीबी में वृद्धि
- (5) पोषण की समस्या

समुद्र जल के स्तर में वृद्धि से उत्पन्न समस्याएं

ग्लेशियरों के पिघलने से नदियों के जलस्तर में वृद्धि होगी जब इन सब नदियों का जल समुद्र में पहुंचेगा तो समुद्र जल स्तर में वृद्धि होगी जिससे भविष्य में भारत के कई तटीय नगर व विश्व के कई द्वीप और देशों के जलमग्न होने की संभावना बढ़ गई है।

Exa – (1) समुद्र जल में वृद्धि होने के कारण, प्रशांत महासागर के तुवालू और कार्टरेट द्वीप प्रायः डूब गए हैं एवं निकट भविष्य में मालद्वीप के भी जलमग्न होने की आशंका है।

(2). हिमनदों के पिघलने से सागर व महासागरों के जलस्तर में वृद्धि हो रही है जिस चीन, फिजी एवं बांग्लादेश के तटीय भाग, सेशेल्स, मॉरिशस तथा भारत के भी कई तटीय क्षेत्रों के डूबने की आशंका जताई गई है।

(3). जब यह सभी स्थान डूब जाएंगे तो वहां रहने वाले लोग अन्य दूसरे आबादी वाले क्षेत्रों में जाएंगे और उन आबादी वाले क्षेत्रों में निवास की समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

पारिस्थितिकी तंत्र एवं वन्यजीव प्रजातियों का नुकसान—

UNEP की एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन 50 जैविक प्रजातियां विलुप्त होने श्रेणियों में आ रही है यह जैविक विनाश, वनों के विनाश से भी संबद्ध है। IUCN भी रेड डाटा बुक के माध्यम से यह बताता है कि कौन से वन्यजीव किस संकट स्तर पर हैं जिनका संरक्षण अति आवश्यक है।

Exa- प्रेयरी भैंस, सफेद हाथी, सफेद बाघ, दरियाई घोड़ा, चिंपांजी, व्हेल, डॉल्फिन, प्रवाल जीव आदि अत्यधिक संकटग्रस्त स्थिति में हैं।

प्रयास –

वैश्विक स्तर पर किए गए प्रयास या उपाय

(1). मानव व पर्यावरण से संबंधित स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 1972 –

कब हुआ– 5 जून 1972

कहां– स्टॉकहोम (स्वीडन)

प्रमुख बातें–

- पर्यावरण संरक्षण के संबंध में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह पहला वैश्विक शिखर सम्मेलन था।
- स्टॉकहोम घोषणा स्वीकार की गई जोकि पर्यावरण एवं सतत विकास से संबंधित थी।
- सभी देशों ने जीवजंतुओं और पौधों से संबंधित संरक्षण कार्यक्रम प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया।
- पर्यावरण विभाग के गठन के संबंध में निर्णय।
- 119 देशों ने पहली बार “एक ही पृथ्वी” का सिद्धांत स्वीकार किया।
- 5 जून को प्रतिवर्ष पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा की गई।
- षष्ठ(संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम) के गठन का निर्णय।
- भारत में प्रोजेक्ट टाइगर कार्यक्रम चलाने का निर्णय।

(2). जलवायु परिवर्तन पर अन्तरासरकारीपैनल IPCC

स्थापना– नवंबर 1988 (UNEP+WMO मिलकर)

पूरा नाम – Intergovernmental Panel on Climate change

मुख्यालय– जेनेवा

प्रमुख उद्देश्य – वैश्विक ताप संबंधी समस्याओं का अध्ययन करने हेतु सरकारी स्तर पर एक तंत्र उपलब्ध कराना।

नोबेल पुरस्कार– 2007 में।

(3). पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र का रियो– सम्मेलन(UNCSD)–

कब– 1992 में

कहां –रियो–डि–जेनेरियो (पृथ्वी) सम्मेलन

आधिकारिक नाम– सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन।

- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन।
  - जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन।
  - मरुस्थलीकरण को रोकने हेतु संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन।
- इस सम्मेलन में निम्नलिखित समझौते स्वीकार किए गए–

एजेंडा– 21– सतत विकास से संबंधित संयुक्त राष्ट्र की एक गैर बाध्यकारी कार्य योजना।

- पर्यावरण एवं विकास पर रियो घोषणा– सतत विकास से संबंधित दस्तावेज
- वन सिद्धांत– वनीकरण से संबंधित विधिक रूप से गैर बाध्यकारी दस्तावेज

(4). जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र समझौता UNFCCC 1992 –

- जलवायु परिवर्तन पर पहला बहुपक्षीय अंतरराष्ट्रीय समझौता
- मार्च 1994 से प्रभावी
- कानूनी रूप से गैर बाध्यकारी।

प्रमुख कार्य–

- जलवायु परिवर्तन के लिए प्रतिवर्ष सम्मेलन आयोजित करना (ब्वच)।

CO-1 (प्रथम सम्मेलन) प्रथम बैठक / सम्मेलन—

कब — 1995

कहां — बर्लिन में ।

COP-3 / क्योटोप्रोटोकॉल

कब—1997

कहां — क्योटो(जापान)

प्रमुख बातें —

कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता

इसी बैठक के अंतर्गत क्योटोप्रोटोकॉल सम्मेलन हुआ। 16 फरवरी 2005 से प्रभावित हुआ। पहली प्रतिबद्धता— (2008— 2012) (6 ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में 1990 के स्तर से 5.2% कटौती करनी थी)

— द्वितीय प्रतिबद्धता— 1 जनवरी 2013—2020

— 6 ग्रीनहाउस गैसों— CO<sub>2</sub>, CH<sub>4</sub>, N<sub>2</sub>O, SF<sub>6</sub>, HFCs, PFCs

क्योटोप्रोटोकॉल के अंतर्गत सदस्य देशों का वर्गीकरण—

एनेक्स -1

इसमें औद्योगिकृत विकसित देश तथा संक्रमण काल से गुजरने वाली अर्थव्यवस्थाये सम्मिलित है।

रूस भी इसमें शामिल था।

यूरोपीय संघ(म् -15)।

जो 1992 में OECD के सदस्य थे।

एनेक्स-2

एनेक्स-1 में शामिल देशों को छोड़कर बाकी सभी देश इस श्रेणी के सदस्य देशों को वित्तीय सहायता द्वारा विकासशील देश की GhG उत्सर्जन कम करने संबंधी गतिविधियों में सहायता करनी होती है।

Note- एनेक्स- 1 में शामिल देशों को हरित गृह गैस उत्सर्जनो में वर्ष 1990 के स्तर से, कम से कम, 18% कम करने की प्रतिबद्धता।

भारत द्वारा इसे 8 अगस्त 2017 में स्वीकार कर लिया गया।

COP-8

कब — 2002

कहां— नई दिल्ली( पहला सम्मेलन जो भारत में हुआ)

COP-11/MOP-1

क्योटोप्रोटोकॉल 2005 में प्रभावी हुआ तब MOP की शुरुआत हुई।

कब— 2005

कहां— मॉन्ट्रियल में

कनाडा द्वारा हस्ताक्षर करने के साथ ही क्योटोप्रोटोकॉल लागू हुआ।

COP- 13/MOP-3

2007 में बाली में समझौता

बाली रोडमैप अथवा बाली एक्शनप्लान

बाली रोडमैप—

एनेक्स -1 के सदस्यों के लिए आगामी प्रतिबद्धताओ पर समूह

अनुकूलन कोष (Adoptation QaM board) की स्थापना ।

तकनीकी हस्तांतरण ।

COP-15/MOP-5

2009 में कोपेनहेगन (डेनमार्क) में ।

पहली बार क्योटोप्रोटोकॉल के तहत एक समय सीमा का निर्धारण विकसित देशों द्वारा 2009 तक प्रतिवर्ष 100 बिलियन डॉलर, विकासशील देशों/गरीब देशों (एनेक्स- 1) को उपलब्ध कराने की बात कही गई ।

इसमें जलवायु वित्त (फण्ड) के प्रबंधन का दायित्व एनेक्स- 1 देशों पर डाला गया तथा 2020 तक 100 बिलियन राशि एकत्रित करने को कहा गया ।

COP-16/MOP -6

कब- 2010 में ।

कानकून सम्मेलन

हरित जलवायु फंड (green climate fund) बनाने का निर्णय ।

इस फंड की देखरेख के लिए, हरित जलवायु निधि बोर्ड बनाया गया और इसका अंतिम ट्रस्टी विश्व बैंक को बनाया गया ।

इस फंड में 24 सदस्य हैं

COP -18/MOP-8

कब- 2012 में

कहां- दोहा सम्मेलन

नाइट्रोजन ट्राईफ्लोराइड (NF3) गैस पर प्रतिबंध(7वीं गैस) ।

COP-21/ MOP-11/CMA- 1

कब - 2015 में

कहां - पेरिस (फ्रांस)

पेरिस जलवायु समझौता/सम्मेलन ।

कानूनी रूप से बाध्यकारी ।

4 नवम्बर 2016 से लागू (55 देशों ने हस्ताक्षर कर दिए) ।

पहली बार विकसित और विकासशील देश, दोनों ने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित अंशदान को प्रस्तुत किया ।

• इस सम्मेलन की शुरुआत 2021( क्योटो समाप्त 2020 में) में होगी ।

USA पेरिस समझौते से अलग होने वाला एकमात्र देश ।

लेकिन जो बाइडेन के कार्यकाल से USA पुनः इसमें शामिल हो गया है ।

पेरिस समझौते का लक्ष्य-

औद्योगिक काल के पूर्व के स्तर की तुलना में वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखना ।

1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के लिए विशेष प्रयास ।

पेरिस जलवायु समझौता और भारत

अप्रैल 2016 में हस्ताक्षर

भारत के सकल घरेलू उत्पाद उत्सर्जन की तीव्रता को वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में 2030 तक 33.35:

तक कम करना ।

COP- 25/MOP-15/CMA-5

2019 में मैड्रिड सम्मेलन (स्पेन) ।

दिसंबर 2019 में

अध्यक्षता— चिली सरकार द्वारा

पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते के लक्ष्यों के अनुरूप पृथ्वी पर वैश्विक तापन (ग्लोबलवार्मिंग) के लिए उत्तरदायी Green house Gas में कटौती के लिए तत्काल आवश्यकता का आह्वान।

IPCC की नई रिपोर्ट—

IPCC ने ग्लोबलवार्मिंग के प्रभावों पर आधारित एक विशेष रिपोर्ट जारी की।

जिसमें चिंता जाहिर की गई की पूर्व औद्योगिक काल से अब तक 1 डिग्री सेल्सियस तापमान में वृद्धि हुई है जो 2030 से 2050 तक 1.5 डिग्री सेल्सियस होने की आशंका है जोकि ग्लोबलवार्मिंग के लिए अच्छा संकेत नहीं है।

इससे बचने के लिए ऊर्जा संरक्षण एवं उपयोग, भूमि उपयोग, शहरीकरण के बुनियादी ढांचा तथा औद्योगिक प्रणालियों में व्यापक परिवर्तन लाना होगा।

डिग्री सेल्सियस तापमान स्तर को रोकने या कम करने के लिए कार्बन उत्सर्जन में वर्ष 2030 तक, 2010 की तुलना में 45% की कटौती करनी होगी और 2050 तक इसमें 100% के स्तर तक ले जाना होगा।

वर्तमान स्थिति को देखकर ये कर पाना लगभग मुमकिन(संभव) नहीं लग रहा है कि इसे 1.5 डिग्री सेल्सियस के स्तर पर रोका जा सकता है।

COP -26/MOP- 16/CMA-6

कब— 2021

कहां— ग्लासगो (स्टॉकलैंड, UK)

रुप्रमुख बातें —

ग्लासगो क्लाइमेट पैक्ट / समझौता हुआ।

पेरिस समझौते के कार्यान्वयन के लिए नियमों और प्रक्रियाओं को अंतिम रूप देना।

विकसित देशों द्वारा 100 बिलियन डॉलर वित्त सहायता न दे पाने पर गहरा खेद जताया।

2025 के बाद 100 बिलियन डॉलर से अधिक जलवायु वित्त के लिए नया लक्ष्य निर्धारित करने पर चर्चा।

मंत्रियों की वार्षिक बैठक का आयोजन।

कोयले के उपयोग व जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त/कम करना।

जीवाश्म ईंधन पर सब्जिडी को समाप्त करने के प्रयास करना।

छोटे, गरीब और छोटे द्वीपीय देश के लिए अनुकूल माहौल उत्पन्न करना।

भारत की ओर से पीएम मोदी ने भी इस बैठक में भारत के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए “पंचामृत सूत्र” दिया।

भारत का पंचामृत सूत्र

- (1). भारत की गैर जीवाश्म ईंधन ऊर्जा को ( क्षमता को) 2030 तक 500 गीगा— वॉट तक ले जाना।
- (2). 2030 तक अक्षय ऊर्जा के माध्यम से भारत की 50% प्रतिशत ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना।
- (3). 2030 तक भारत की अर्थव्यवस्था से कार्बन तीव्रता को 45% से अधिक कम करना।
- (4). अब से 2030 तक इसके शुद्ध अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कटौती करना।
- (5). 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य।

“नेट जीरो” की संकल्पना पहली बार IPCC ने 2018 में दी।

भारत का पड़ोसी देश भूटान एक नेट जीरो (कार्बन न्यूट्रल) देश है।

**COP - 27/MOP-17/CMA-7**

कब – 2022

कहाँ— शर्म—अल—शेख ( मिस्त्र का बंदरगाह शहर) में।

प्रमुख बातें—

COP –26 के परिणामों पर आधारित।

पेरिस समझौते को पूरा करने के लिए देशों के बीच नए सिरे से एकजुटता लाना इसका प्रमुख एजेंडा है।

ग्रीन हाउस गैसों को तत्काल (उत्सर्जन को) कम करना।

विकासशील देशों में जलवायु कार्यवाही के वित्तपोषण के लिए प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।

इसे अफ्रीकी COP कहा जा रहा है।

**COP& 28/MOP&18/ CMA& 8**

कब – 2023 में

कहाँ – दुबई (UAE) में

मुख्य एजेंडा(ड्राफ्ट)— ग्लोबल स्टॉकटेक (व्यापक मूल्यांकन)

इस एजेंडा के तहत,पेरिस समझौते और इसके तहत किए गए उपायों/प्रयासों की समीक्षा।

GHG उत्सर्जन को रोकने और जलवायु कार्यवाही के बीच मौजूद अंतर को कम करने हेतु उपाय किए जाएंगे।

1.5 डिग्री सेल्सियस का लक्ष्य।

जबकि 2023 साल में 80 से 100 दिनों का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा ,जोकि पिछले सभी सालों से अधिक है और यह चिंता का विषय है ।

जीवाश्म ईंधन के सभी स्रोतों (कोयला) को पूर्णतया खत्म करने का लक्ष्य।

नोट – भारत का पक्ष— जीवाश्म ईंधन को पूर्णतया समाप्त करने से साफ इन्कार क्योंकि भारत में विद्युत सिस्टम पूर्ण रूप से कोयला पर निर्भर है,इसलिए भारत ने इस प्रतिबद्धता पर हस्ताक्षर नहीं किए।

लेकिन भविष्य में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने का प्रयास (लक्ष्य) करेंगे।

2050 तक नेट जीरो का लक्ष्य

प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयासों व उपायों की समीक्षा ।

**COP&-29/MOP- 19/CMA- 9**

कब – आगामी नवम्बर 2024 में

कहाँ – बाकू (अजरबैजान की राजधानी)

निष्कर्ष

अतः वर्तमान में जो ग्लोबलवार्मिंग व क्लाइमेटचेंज की जो घटनाये देखने को मिल रही है वह पूर्व काल में पश्चिमी देशों (यूरोपीय देशों) में हुई औद्योगिक क्रांति का परिणाम है लेकिन यह बड़े यूरोपीय व अन्य देश, छोटे व निर्धन देशों पर, इन सब समस्याओं का दोषारोपण कर रहे हैं जोकि सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है, क्योंकि छोटे देश व गरीब देश इसके लिए जिम्मेदार नहीं है और न ही इन समस्याओं से निपटने में समर्थ हैं तथा वह इन समस्याओं से संबंधित उपकरण भी नहीं खरीद सकते क्योंकि ये उपकरण अत्यधिक महंगे आते हैं। जैसा कि COP- 15 के कोपेनहेगन (डेनमार्क) सम्मेलन के अंतर्गत विकसित व विकासशील देशों द्वारा, गरीब देशो को 100 बिलियन डॉलर प्रतिवर्ष उपलब्ध कराने की बात कही गई थी, उसे भी ये सभी विकासशील देश उपलब्ध कराने में असमर्थ रहे।

अतः सभी विकासशील व विकसित और समर्थ देशों को मिलकर इन सब गरीब व छोटे देशों की वित्तीय मदद करनी चाहिए, जिससे वे भी इन समस्याओं के लिए ठोस कदम उठा सके। जिस प्रकार वर्तमान में पर्यावरण से संबंधित बैठके होती हैं और उसमें जो निर्णय लिए/लक्ष्य बनाए जाते हैं और उसे उस समय के अंदर पूरा करने का भरोसा भी दिया जाता है और यह सभी लक्ष्य, देशों द्वारा तय समय में पूरे नहीं किये जाते अर्थात् सभी देशों द्वारा इसके लिए सुदृढ़ कदम नहीं उठाए जाते और फिर इसे कुछ और समय के लिए आगे बढ़ा दिया जाता है जोकि मजाक सा प्रतीत होता है।

अतः सभी देशों को आपस में समन्वय करके कुछ नये नियम व कानूनों को बनाने तथा उसे दृढ़ता पूर्वक लागू करने की आवश्यकता है और जो देश तय समय के भीतर अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाता है तो उसके लिए दंड— स्वरूप जुर्माना का प्रावधान करना चाहिए। इससे सभी देश पर्यावरण समस्याओं के प्रति ओर अधिक सजग होंगे।

ये सभी प्रयास मुख्यतः विश्व, राष्ट्रीय व मानव स्तर पर किये जाना चाहिए, हम वर्तमान में देखें तो कुछ मामलों को छोड़कर विश्व तथा देश स्तर पर इसके अच्छे प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन मानव स्तर पर यह नाममात्र देखने को मिलता है जोकि चिंता का विषय है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विश्व तथा देश स्तर पर पर्यावरण संरक्षण, ग्लोबलवार्मिंग, क्लाइमेटचेंज आदि के लिए विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी सभी देश, ग्लोबलवार्मिंग और क्लाइमेटचेंज को रोकने में पूर्णतया सफल नहीं हो पाए हैं।

### **Bibliography-**

- \* WWW.Google.com
- \* WWW.Wikipedia.Com
- \* WWW.drishtias.Com
- \* WWW.Worldgeography.Com
- \* WWW.Indiangeography.Com
- \* www.undp.org
- \* www.unep.org
- \* www.unepreport.org
- \* WWW.YouTube.com
- \* WWW.byjus.com
- \* www.climatechange.com
- \*Cavert, W., ‘The Environmental Policy of Charles I: Coal Smoke and the English Monarchy, 1624–40’, *Journal of British Studies* 53 (2) (2014): 310–33.
- \*Cavert, W., *The Smoke of London: Energy and Environment in the Early Modern City* (Cam-bridge: Cambridge University Press, 2016).
- \*Chatteddu, I., *Archéologie médiéval en France: Le premier moyen âge (Ve-XIe Siècles)* (La Découverte, 2009).
- \*Cheyette, F., “The Disappearance of the Ancient Landscape and the Climatic Anomaly of the Early Middle Ages: A Question to be Pursued” *Early Medieval Europe* 16 (2008), 127-165.
- \*Churakova O., et al, “A Cluster of Stratospheric Volcanic Eruptions in the AD 530s Recorded in Siberian Tree Rings” *Global and Planetary Change* 122 (2014), 140-150.
- \*Ciuccarelli, C., “First Historical Evidence of a Significant Mt. Etna Eruption in 1224” *Journal of Volcanology and Geothermal Research* 178 (2008), 693-700.

- \*Classen A. Ed., *Urban Space in the Middle Ages and the Early Modern Age* (Walter de Gruyter, 2009)
- \*Alvarez, Alex. *Unstable Ground: Climate Change, Conflict, and Genocide*. Rowman & Littlefield, 2017.
- \*Bond, Patrick. *Politics of Climate Justice: Paralysis Above, Movement Below*. University of KwaZulu-Natal Press, 2012.
- \*Brand, Ulrich, et al. *Contours of Climate Justice: Ideas for Shaping New Climate and Energy Politics*. Dag Hammarskjold Foundation, 2009.
- \*Brannen, Peter. *The Ends of the World: Volcanic Apocalypses, Lethal Oceans, and Our Quest to Understand Earth's Past Mass Extinctions*. Ecco Books, 2017.
- \*Bruno, Kenny et al. *Greenhouse Gangsters vs. Climate Justice*. Transnational Resource and Action Center, 1999.
- \*Building Bridges Collective. *Space for Movement? Reflections from Bolivia*. Leeds University Press, 2010.
- \*Davis, Jack E. *The Gulf: The Making of An American Sea*. Liveright, 2017.
- \*Egan, Dan. *The Death and Life of the Great Lakes*. W.W. Norton & Company, 2017.
- \*Eriksen, Marcus. *Junk Raft: An Ocean Voyage and a Rising Tide of Activism to Fight Plastic Pollution*. Beacon Press, 2017.
- \*Goodell, Jeff. *The Water Will Come: Rising Seas, Sinking Cities, and the Remaking of the Civilized World*. Little, Brown and Company, 2017.
- \*Goodrich, David. *A Hole in the Wind: A Climate Scientist's Bicycle Journey Across the United States*. Pegasus, 2017.
- \*Klein, Naomi. *This Changes Everything: Capitalism vs. The Climate*. Simon & Schuster, 2014.
- \*Lynas, Mark. *The God Species: Saving the Planet in the Age of Humans*. National Geographic, 2011.
- \*McKibben, Bill. *The End of Nature*. Random House, 2006.
- \*Tokar, Brian and Eirik Eiglád. *Toward Climate Justice: Perspectives on the Climate Crisis and Social Change*. New Compass Press, 2014.